OM-4- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 26/04/2021 1:55 PM Page 11

ये यात्रा है अपने मन की...

दुनिया एक 'गोल' है, गोल में कोई मालामाल है तो कोई नहीं। हाँ, हम बात कर रहे हैं भारत की। हम कई बार सुनते हैं, छोटे बच्चे भी गीत गुनगुनाते हैं कि हमारा भारत सोने की चिड़िया था...। ये चक्र है। चक्र गोल होता है। चक्र में हम कहीं से भी अपनी यात्रा आरंभ करें, लेकिन चलते-चलते हम वहीं पहुंचेंगे जहाँ से आरंभ किया है। क्योंकि ये गोल है, कोई सीधी रेखा नहीं है। इसी तरह हम जब उस समय-काल में जब भारत सोने की चिड़िया था, तब हम इस धरा पर आये और हमने यात्रा आरंभ की, जहाँ सुख-शांति-सुविधाओं की प्रचुरता थी। पर हम यहाँ

इस बात को कहना चाहते हैं कि ऐसा क्यों था, जहाँ सतोप्रधानता थी, तो सबकुछ सत था तो सुख था। ये हमारी सतोप्रधान मनोस्थिति का ही परिणाम है। कहते हैं, मन चंगा, तो कठौती में गंगा। माना कि वहाँ हर हाल में हमारा मन सतोप्रधानता की स्थिति से विमुख नहीं था।
हमारे मन रूपी बैटरी फुल सतोप्रधानता से चार्ज थी। तो हमें न कोई चिंता थी, न भय था, न दुःख था। सिर्फ खाना, पीना और मौज करना। क्योंकि हमारी तिजोरी में बैंक बैलेंस अथाह था। तो कोई भी चिंता की लकीर या कमाने की फिकर नहीं थी। इसलिए जाने-अनजाने भी स्वर्णिम काल अर्थात् सोने की चिड़िया के रूप में हमारे मन-मस्तिष्क पर उभर आता है। धीरे-धीरे हमारी यात्रा आगे बढ़ी। हमारी बैटरी डिस्चार्ज होती गई, अर्थात् सतोप्रधानता से सतो-सामान्य, फिर रजो, फिर तमो तक पहुंच गये। सतो-सामान्य थे, तब तो हमारी बैटरी ने हमारा भरपूर साथ दिया, हमने खूब आनंद लिया, सुख-सुविधायें भोगी। पर हम थोड़ा उससे नीचे उतरे तो मन में थोड़ी हलचल होने लगी। कुछ अपने में कमी खली, परिवार में कम-ज़्यादा की महसूसता हुई। उसका प्रबंध करने के लिए हमारे मन में चिंताओं की रेखाएं आने लगी। उसे पूर्ण करने के प्रबंध में हम जुट गये। पर कितना भी प्रयत्न करने पर भी हम पहले वाली मनो-स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाये। ज्यों-ज्यों प्रयत्न करते गये, त्यों-त्यों और ही उलझते गये। मन में चाहते हुए भी वो स्थिति प्राप्त नहीं हुई। हो कैसे सकेगी, बैटरी को चार्ज करने के लिए पावर हाउस से कनेक्ट करना पड़ता है। हमें तो न ही मन रूपी बैटरी को चार्ज करने का ज्ञान था, न ही उसका तरीका मालूम था और न ही पावर हाउस का पता था।
जीवन-यात्रा को कैसे न कैसे आगे बढ़ाते गये और यात्रा के दौरान कई साइड-सीन आती गई, कई गुरू, कई महात्माओं ने भी हमें सहारा दिया, सहायता की, पर आधी-अधूरी, जिससे हमारा मन तृप्त नहीं हुआ। हम फिर और वही स्थिति को प्राप्त करने की खोज में पेड़-पौधे, पूजा-पाठ का सहारा लेने लगे। पर ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज उतना ही बढ़ता गया। जहाँ से चक्र में हमने शुरु किया था, हमारा चक्र घूमते-घूमते बस वहीं पहुंचने के दो कदम दूरी पर हम ऐसी व्याकुलता की स्थिति में हो गये कि न रही सुध खुद की और न औरों की। हम एक-दूसरे को ही मारने-काटने पर उतारू हो गये। ये दौर भी बहुत ही भयानक है, जहाँ सब को अपनी यात्रा में उल्टे-सुल्टे जो भी किये हुए कर्म हैं, उनका हिसाब चुक्तू होने का समय है, इसीलिए यह भयावह व कठिन दौर लगता है। जब तक आपस में लेन-देन, बही खाता ज़ीरो पर नहीं आता, तब तक हम पुनः उस बिन्दु तक नहीं पहुंच पाते जहाँ से हमने यात्रा आरंभ की थी। पर हम आपको यह बताना चाहते हैं कि यहाँ पर मानवमात्र के लिए एक बहुत ही सुंदर वेला का समय इस चक्र में आता है जहाँ हमें दुःख, अशांति, मेरा-तेरा से छुड़ाने के लिए ज्ञान-सूर्य परमपिता परमात्मा का आगमन होता है। क्योंकि वे हम सबको इस दुःख से मुक्त कराकर फिर उसी स्वर्णिम सतयुगी दुनिया में ले जाने की राह दिखाते हैं। उसके सानिध्य में आने पर हमारे मन की तार उनसे जुट जाती और हमारे मन रूपी बैटरी फुल चार्ज हो जाती। अब हमें उसी स्थिति पर पहुंचना है जहाँ से हमने अपनी जीवन यात्रा आरंभ की थी। वही सत्यम् शिवम् सुंदरम, जो श्रेष्ठ है, सुंदर है, वो ही तो हमें वैसी दुनिया में ले जायेगा जैसी दुनिया हम चाहते हैं। वो हमारी चाह की राह को गाइड बनकर आसान बनाता और हमें पुनः वहाँ ले जाता। और फिर इस दुःखद खेल के अंत के साथ फिर पुनः सुःखद खेल का आरंभ होता है। खेल में सबको मज़ा आता है। ये सारा चक्र अनादि फिरता रहता है। यह हमारी मनोस्थिति का ही परिणाम है। कहते हैं, जैसी मनो-अवस्था, वैसी व्यवस्था। ये हमारे मन की ही कहानी है। और आज हम ये देख रहे हैं कि हम और आप, सभी इसी समय से गुज़र रहे हैं। लेकिन जानो, पहचानो अपने प्राणप्रिय परमपिता परमात्मा को, जो आया हुआ है। जिसने जाना, उसने मनोइच्छित फल पाया। जिन्होंने इधर-उधर देखने में, खोजने में वक्त गंवाया, उसने ये सुंदर अवसर गंवाया। ये है हमारे गोल की यात्रा। गोल में जिन्होंने उसे जाना वो मलामाल और जिन्होंने नहीं जाना, वो कंगाल। अरे, उठ अभी जाग। अभी भी वक्त है। नहीं तो आँखें मसलते ही रह जाओगे और हाथ मलते ही रह जाओगे।

गया-सिविल लाइन। दादी जानकी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रेलवे अधिकारी ज्योति कुमारी, नगर पार्षद सारिका कुमारी, प्रमुख व्यवसायी बबिता अग्रवाल, निमिशा बहन तथा राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। दादी जानकी के प्रथम स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं इंडस्ट्रियल एरिया के अध्यक्ष देवेन्द्र मेहता, एडवोकेट चौधरी विक्रम सिंह, पूर्व सहायक कोषाधिकारी दाऊदयाल अग्रवाल, व्यापारी अरविंद अग्रवाल, ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. उर्मिल, ब्र.कु. दिनेश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मेलबॉर्न-वी.आई.सी.(ऑस्ट्रेलिया)। वुमेन्स फेडरेशन फॉर वर्ल्ड पीस द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. मौरीन चेन,नेशनल कोऑर्डिनेटर,ताइवान तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

मीरगंज-बिहार। होली मिलन समारोह में दरोगा परमानन्द राय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंगूर बहन। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. कान्ति, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. पूनम।

राजकोट-पंचशील(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं राजकोट महानगरपालिका के सहयोग से आयोजित वेक्सीनेशन कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए मेडिकल ऑफिसर उर्वशी बहन, वार्ड ऑफिसर काशमीरा बहन वाढेर, कॉर्पोरेटर जया बहन डांगर तथा अन्य।

नवरंगपुर-ओडिशा। दादी हृदयमोहिनी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् उपस्थित हैं डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर डॉ. अजीत कुमार मिश्रा, सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस प्रहलाद साही मीना, जनरल मैनेजर बानेश्वर सुबुधी, उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. नीलम दीदी, ब्र.कु. नमिता, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. अभिजीत।

कुन्हाड़ी-कोटा(राज.)। आध्यात्मिक समारोह में आयोजित 'खुशनुमा जिंदगी' कार्यक्रम के दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला दीदी को अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित करते हुए मधुबन पार्क विकास समिति के सभी सदस्य।

मथुरा-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कृष्णा विहार रिफाइनरी नगर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलायें हैं समाज की सच्ची वास्तुकार' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाएं देने वाली विशिष्ट महिलाओं को सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा द्वारा ट्रॉफी और सर्टीफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

सादुलपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् भारत साधु समाज के अध्यक्ष महंत बंशीपुरी जी,दक्षिणकाली पीठ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा बहन। साथ हैं अखिल भारतीय मारकंडेश्वरजन सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत जगन्नाथ पुरी जी,कुरुक्षेत्र, प्रयागराज से थानापति दिगंबर स्वामी प्रमोदपुरी जी, स्वामी महेशपुरी जी तथा कथावाचक एवं भजन गायक महाराज श्री उपेन्द्र पांडिया, ब्र.कु. सुशील तथा एडवोकेट बृजमोहन शर्मा।